

२५२

धर्मरत्न बज्राचार्य सुरत श्री महाबहार

DH154

cat 154



[illegible]

दय्यादिमहायज्ञायनमन्त्रिणुजं हं हृदस्वाहा ॥ मयहावा ॥ वा ॥



२२४

२२४

२२४

षोडशलास्या
वज्रवीनेक्याहन्

धर्मरत्न ब्रह्मचार्य सुरत श्री महाबिहार

DH154

१३ वं वी न द्रो



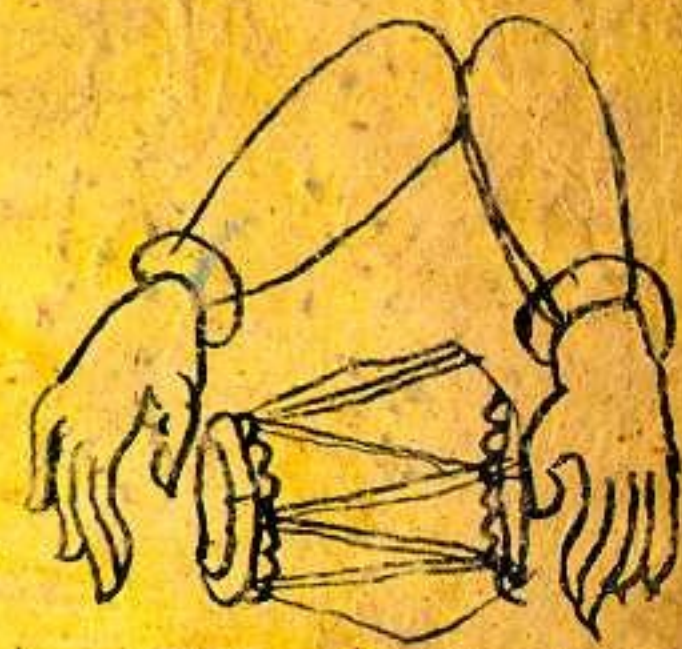
वीन

१४ वं वं ल ग्यो



वीन

१५ वं वं दं गं जो



मृद

१६ वं वं नू नू



मृद

१७ वं वं ल गं द्रो



वीन

१८ वं वं भा न ग्यो



वीन

१३ वज्र नील कीर्ति



स्यम

१४ वज्र नृस्यमः



नका

१५ वज्र धृष्टाक्षः



स्यम

१६ वज्र धृष्टाक्षः



कव

१७ वज्र वत्सकिर्तिः



पीन

१८ वज्र वत्सकिर्तिः



स्यम

१३ वंश वंश

१३ वंश वंश

१३ वंश वंश



वृ



वृ



वृ

१३ वंश वंश



वृ